Vol. 10
Issue 1
15 January, 2019
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

कौटिल्य एवं मैकियावली की राजनीतिक व प्रशासनिक दृष्टिः एक तुलनात्मक अध्ययन

बीज शब्द :

कौटिल्य, मैकियावली, प्रशासन, अर्थशास्त्र, द प्रिंस, सैन्य व्यवस्था

कौटिल्य और मैकियावली राजनीतिक चिंतन के इतिहास के शिखर स्तम्भ हैं। दोनों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि दोनों के चिंतन का विकास अपने राज्य की प्रतिकूल परिस्थितियों में हुआ था। कौटिल्य ने जहाँ नन्दराज की उत्पीड़नकारी नीतियों के प्रतिकार के भारत राष्ट्र को एकीकृत एवं संगठित करने का प्रयास किया वहीं मैकियावली ने विखण्डित इटली को संगठित कर अखण्ड राष्ट्र के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार की। दोनों की वैचारिक सभ्यता की दृष्टि से दोनों ने राजा के व्यक्तित्व, चरित्र, राज्य के स्वरूप (सावयवी), भूमिका एवं परराष्ट्र नीति पर लगभग एक जैसा विचार प्रस्तुत किया। कौटिल्य और मैकियावली न केवल विचारक थे बल्कि वे राजकार्य में सहयोगी भी थे। कौटिल्य चन्द्रगुप्त के प्रधानमंत्री तो मैकियावली इटली के प्रधान सचिव थे। दोनों के तुलनात्मक अध्ययन में कुछ विषमताएं भी हैं। कौटिल्य ने जहाँ राजा को नैतिकता की मूर्ति माना वहीं मैकियावली ने राजा को नैतिकता के बन्धन से मुक्त कर दिया। उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर हम उल्लेखित कर सकते हैं कि जहाँ कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र पर लिखा गया पूर्ण प्रबन्ध है वहीं मैकियावली का द प्रिंस शासन कला का व्यापक विस्तार ग्रंथ है।

*****

ओमप्रकाश सिंह
अध्यापक नागरिक शास्त्र,
आर0बी0एम0एल0 इण्टर कालेज,
तेलीबाग, लखनऊ

कौटिल्य एवं मैकियावली की राजनीतिक व प्रशासनिक दृष्टिः एक तुलनात्मक अध्ययन

प्राचीन भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने में कौटिल्य का योगदान सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है, जो कि एक विशुद्ध राजनीतिज्ञ विचारक थे। उनका ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है। एक प्रशासकीय संगठन की योजना के रूप में अर्थशास्त्र से श्रेष्ठ ग्रन्थ भारतीय साहित्य में नहीं है, जो अपने नियमों के विस्तार में पूर्ण तथा वर्णन में व्यापक है। पूर्ववर्ती युग के आध्यात्मवादी प्रचार के विरुद्ध हुई भौतिकतावादी प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करने वाला यह ग्रंथ शासन की कला का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है। इसमें राजनीति के विविध पक्षों की विपुल विवेचना प्रस्तुत की गयी है। शासन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाना ही इस ग्रंथ का उद्देश्य था।

कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री तथा पुरोहित थे और नन्दों का नाश करके भारत को राजनीतिक एकता के सूत्र में बांधने का सफल प्रयास करके उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को भारत का सम्राट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। अर्थशास्त्र के अन्त में कहा गया है कि इसकी रचना उस व्यक्ति ने की है, जिसने क्रोध के वशीभूत होकर शस्त्र, शास्त्र और नन्दराज के हाथ में गयी हुई प्रथ्वी का उद्धार किया। अर्थशास्त्र मौर्यकालीन रचना है जिसमें कौटिल्य के विचार उसी के द्वारा प्रस्तुत किये गए हैं। कालान्तर में अन्य लेखकों द्वारा इस ग्रंथ में कुछ प्रक्षिप्तांश जोड़ दिये गए जिससे मूल ग्रंथ का स्वरूप परिवर्तित सा हो गया और कुछ विद्वानों ने इसे बाद की शताब्दियों में स्वीकार करनें में कोई संकोच नहीं किया। परन्तु ग्रंथ में वर्णित कुछ वाक्यों या अध्यायों को छोड़कर यह कहना ज्यादा न्यायसंगत है कि इसका अधिकांश भाग मौर्यकालीन है।

कौटिल्य ने राज्य को मानवीय संस्था के रूप में प्रस्तुत करते हुए राजनीति को धर्म और नैतिकता के प्रभाव से मुक्त करने का प्रयास किया है। दर्शन-विवादों से दूर रहकर राज्य के एक व्यावहारिक स्परूप को प्रस्तुत करना उसका प्रमुख ध्येय था। उनकी राजनीति का मूलमंत्र साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति में समाहित था और इस नीति द्वारा वह दुर्बुद्धि राजपुत्र को भी सन्मार्ग पर लाने का पूरा प्रयास करते हैं। श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधनों को उचित बताते हुए उन्होंने कहा है कि छल के द्वारा कार्य की सिद्धि सहज है। उनके मतानुसार राजनीति में सभी कुछ वैध है और अपने उद्देश्य को प्राप्त करने एवं सफल होने के लिए विरोधी को किसी भी उपाय से समाप्त करने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए। उन्होंने एक ऐसे राज्य की परियोजना की थी जिसकी सत्ता व्यापक हो। राजा को धर्म प्रवर्तक मानते हुए उनका मत है कि जनता में उपद्रव प्रायः राजा के अज्ञान तथा उसकी अनुशासनहीनता के कारण होते हैं। अतः राजा को इन्द्रिय-निग्रह का अभ्यासी होना चाहिए। राज्य को बचाए रखने के लिए लोगों को दरिद्रता, द्वेष एवं लाभ उत्पन्न होने का अवसर न देना राजा का परम् कर्तव्य बताया गया है। मंत्री, पुरोहित, भृत्य वर्ग, अमात्य अध्यक्ष, सेना तथा दुर्ग पर आयी हुई विपत्ति के प्रतिकार तथा उन्नति का कारण राजा को कहा गया है। सेना के उचित संगठन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने जहाँ एक ओर हस्ति, अश्व, रथादि का उल्लेख प्रस्तुत किया है वहीं पदाति सेना के 6 अंगो मौल, भृत्य, श्रेणी, मित्र, अमित्र और आटविक का विशेष उल्लेख किया है। राज्य में आए आन्तरिक और बाहरी क्षोभ को राजा तभी तक समाप्त कर सकता है जब उसके पास उचित सैन्य बल हो। राज्य की विस्तारवादी नीति और पारस्परिक संबंधों को आधार मानते हुए कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त की जो व्याख्या प्रस्तुत की है, वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अति महत्वपूर्ण है। जिसके क्रियान्वयन हेतु सन्धि, विग्रह, यान आदि नीतियों का यथार्थ रूप देने का सफल प्रयास किया गया है। राज्यों में दूत व्यवस्था के अन्तर्गत उन्होंने उनकी तीन श्रेणियों- निःसृष्टार्थ, परिमितार्थ और शासनहर पर प्रकाश डालते हुए दो प्रकार के गुप्तचरों- संस्था और संचरा का उल्लेख किया है। इस प्रकार समय और आवश्यकता के अनुरूप कौटिल्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र राजनीति पर लिखा गया एक अनुपम ग्रंथ है जो शासन विषयक समस्त बिन्दुओं को अपने में समेटे हुए है। देश और काल के अनुरूप ही इसमें राजनीतिक व्यवस्था का सजीव चित्रण मिलता है।

कौटिल्य की विचारधारा के सबसे निकट यदि कोई पाश्चात्य विचारक है तो वह निश्चित रूप से मैकियावली ही है। राजनीतिक दर्शन में उसको 'युग का शिशु' भी कहने के साथ-साथ 'आधुनिक युग का जनक' भी बताया जाता है। उसके राजनीतिक विचारों के प्रतिपादन में देश और काल दोनों की एक पृष्ठभूमि है। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मानव स्वभाव- दुष्ट और धोखेबाज होता है, इसीलिए उससे निपटने के लिए सरकार भी उतना ही निरंकुश और शक्तिशाली होनी चाहिए। कौटिल्य की ही भाँति उसका भी दृष्टिकोण था कि श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी साधन उचित हैं। मैकियावली दार्शनिक न होकर एक पक्के अवसरवादी राजनीतिज्ञ थे। राजा

को सफलता प्राप्त करने के लिए उन्होंने उसे अनैतिक उपाय अपनाने को परामर्श दिया है। कौटिल्य की ही भाँति मैकियावली भी दृढ़ राष्ट्रवादी और अपने देश की एकता को स्थापित करने हेतु कटिबद्ध थे। कौटिल्य ने यदि विशाल राष्ट्र स्थापित करने के दृष्टिकोण से अर्थशास्त्र की रचना की तो मैकियावली ने इटली की एकता स्थापित करने हेतु 'द प्रिंस' की रचना की। दोनों ही अपने देश में मुख्य राजनीतिक पदों पर आसीन थे। कौटिल्य यदि चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री थे तो मैकियावली ने लगभग 15 वर्ष तक इटली के प्रधान सचिव तथा यूरोप के अनेक देशों में राजदूत के पद पर कार्य किया। कौटिल्य की ही भाँति मैकियावली ने भी 'द प्रिंस' में राजा को प्रशासनिक व्यवस्था से संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं, जिसमें कुछ इस प्रकार हैं-

1. मैकियावली के अनुसार नए राजतन्त्र को स्थापित करने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में राजा को अपने पड़ोस के निर्बल राज्यों के साथ मित्रता स्थापित करके बड़े और प्रतिद्वन्दी राज्य के विरूद्ध सुदृढ़ मोर्चा बनाना चाहिए। यदि राज्य पर किसी आपत्ति की सम्भावना हो तो सम्भावना आने के पहले ही उसे उससे निपट लेने का प्रयत्न करना चाहिए।

2. राजा को कभी भी ऐसी बुराइयों को करने से नहीं डरना चाहिए जिसके कारण वह अपने राज्य को सुरक्षित रखने में सफल हो सकता है। उसके अनुसार राज्य की रक्षा करना राजा का परम् कर्तव्य है इसके लिए उसे कुछ भी साधन अपनाने पड़ें, सभी प्रशंसनीय कहे जाएंगे।

3. मैकियावली का कहना था कि यदि आप राजा हैं तो उदारता हानिकारक है। यदि आप राजा बनने की कोशिश कर रहे हैं तो बेहतर यही होगा कि लोग आपको उदार समझें।

4. राजा के लिए यह उचित है कि वह सीमा की रक्षा व्यवस्था में अधिक ध्यान न देकर राजधानी की किले बन्दी पर अधिक ध्यान दे और पूरे वर्ष के लिए शस्त्र और सामग्री एकत्र करे।

5. राजा को कभी भी किराये की सेना पर भरोसा नहीं करना चाहिए। उसे स्वयं की सेना रखनी चाहिए। यदि राजा के पास अपनी सेना साथ हो तो क्रूर बन जाने में जरा सी भी परवाह नहीं करना चाहिए। मैकियावली का यह भी मानना था कि बातों से जनता को समझाकर वश में नहीं किया जा सकता, उससे बातें करने के लिए शस्त्र का हाथ में होना अति आवश्यक है।

6. राजा को चाहिए कि जिस राज्य पर वह अधिकार स्थापित करे, उसके सारे परिवार तथा संबंधियों और सामन्तों को पूर्ण समाप्त कर दे। ऐसा करने से उसके विरुद्ध विद्रोह होने की सम्भावना नहीं रहेगी।

7. मैकियावली का मानना था कि जो कार्य जोखिम और जटिल हो उसे अपने पदाधिकारियों को सौंपना चाहिए और सम्मानित कार्य को उसे स्वयं करने की अभिलाषा रखनी चाहिए। इससे उसके सम्मान में वृद्धि होगी। लोगों से प्रेम करने की अपेक्षा उसे डराना कहीं ज्यादा अच्छा है।

उपरोक्त समस्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मैकियावली राज्य के पोषक (Supporter of the Society) थे। उन्होंने राजा को सलाह दी वह प्रत्येक प्रकार का साधन अपना सकता है। कौटिल्य की भाँति वह भी राष्ट्रीयता के समर्थक (Supporter of the Nationality) थे। दोनों ने निर्भीकता के साथ लोगों को अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए प्रेरित किया और इतिहास के अध्ययन में समान रूप से बल दिया। दोनों ही विचारकों ने एक केन्द्रीय सत्ता की स्थापना पर जोर दिया और शक्ति की सर्वोच्चता की पूजा की। दोनों ने शासन को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु योग्य पदाधिकारियों की नियुक्ति पर बल दिया। दोनों ही राजतंत्र और गणतंत्र के विचारक थे, परन्तु जितना महत्व दोनों ने राजतंत्र को दिया उतना शायद गणतंत्र को नहीं प्रदान किया। दोनों ने ही राजनीति में छल-कपट, विश्वासघात और नैतिक दृष्टि से जघन्य माने जाने वाले सभी कार्यों का समर्थन किया है। दोनों का उद्देश्य था कि राज्य सैनिक दृष्टि से मजबूत होना चाहिए क्योंकि राजा राज्य की रक्षा करने और उसकी सीमाओं को बढ़ाने में तभी सफल हो सकता है जब उसके पास अच्छे सैनिकों की कतार हो। दोनों का यह मानना था कि धन से अच्छे सैनिक नहीं मिलते बल्कि अच्छे सैनिक द्वारा लूट आदि से धन प्राप्त होता है। दोनों ने यह बताने की चेष्टा की कि राज्य एक ऐसी सर्वोपरि सत्ता है जिसकी अधीनता में ही अन्य सारी संस्थाएं और संगठन उन्नति की ओर अग्रसर हो सकते हैं। राज्य द्वारा नियंत्रित होकर ही वे अपना कार्य सुरक्षित होकर सुचारू रूप से कर सकते हैं। राजतंत्र के प्रबल समर्थक होते हुए दोनों ने यह स्वीकार किया कि राज्य बिना अच्छे कानून के स्थायी नहीं रह सकता। दोनों ने ही इसी कारण न्यायालयों की व्यवस्था को अनिवार्य बताया है। दोनों का मानना था कि कानून और सरकार किसी भी राज्य के नागरिकों के राष्ट्रीय चरित्र और व्यक्तित्व के प्रतीक होते हैं और उनमें नैतिकता और सदाचार जैसी भवनाओं का संचार करते हैं।

उपरोक्त अनेक समानताओं के होते हुए भी दोनों विचारकों में कुछ अन्तर भी प्रतीत होते हैं। मैकियावली का सम्पूर्ण

विचार दर्शन केवल राजनीति से ही संबंधित है, जबकि कौटिल्य ने सम्पूर्ण मानव जीवन का विस्तृत विश्लेषण किया है और इतिहास के अन्य पक्षों पर भी प्रकाश डाला है। कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा एक विशाल साम्राज्य स्थापित करवाकर उस साम्राज्य के महामंत्री के रूप में अपने प्रशासनिक सिद्धान्तों को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करवाकर भारत को एकता के सूत्र में बांधने का जो प्रयास किया, वह मैकियावली द्वारा सम्भ्व न हो सका। इस तरह प्रशासनिक व्यवस्था के संदर्भ में कौटिल्य मैकियावली से ज्यादा व्यावहारिक थे। कौटिल्य मैकियावली की अपेक्षा अधिक दूरदर्शी प्रतीत होते हैं और उनके द्वारा स्थापित राजनीतिक सिद्धान्त आगे आने वाले समय में अत्यधिक प्रभावकारी सिद्ध हुए, परन्तु इतना होते हुए भी दोनों ही विचारकों को एक सच्चा देशभक्त मानने में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। दोनों ने अपनी विचाराधाराओं द्वारा प्रशासनिक व्यवस्था का जो सांगोपान विवरण प्रस्तुत किया है, वह राजनीतिक क्षेत्र में अद्वितीय है।

सन्दर्भः

1. द्रष्टव्य, बेनी प्रसाद, द स्टेट इन एंशिएण्ट इण्डिया, इलाहाबाद (1928), पृ0 253
2. द्रष्टव्य, एन0सी0 बन्धोपाध्याय, डेवलेपमेंट ऑफ हिन्दू पॉलिटी एण्ड पोलिटिकल थेयरीज, कलकत्ता, (1938), पृ0 54
3. लल्लनजी गोपाल, प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा, वाराणसी (1999) पृ0 125
4. अनंत सदाशिव अलतेकर, प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, वाराणसी (2003) पृ0 8
5. रामशरण शर्मा के अनुसार अर्थशास्त्र का कुछ अंश ईसवी सन् की दूसरी शताब्दी की वस्तुस्थिति को प्रतिबंधित करते है। द्रष्टव्य प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ, नई दिल्ली, (1990) पृ0 35
6. द्रष्टव्य, ए0एस0 अलतेकर, पूर्वोक्त, पृ0 11
7. अर्थशास्त्र, 1.17.6.
8. तत्रैव, 5.1.12.4, 14.1-4
9. एच0एन0 सिन्हा, द डेवलेपमेंट ऑफ इण्डियन पॉलिटी, बम्बई, (1963) पृ0 125
10. द्रष्टव्य, कौलेश्वर राय, इतिहास दर्शन, इलाहाबाद, (2004), राजनीतिक चिन्तन, अध्याय-3, पृ0 44
11. अर्थशास्त्र, 8.1.12-13, कौटिल्य ने सप्तांग सिद्धान्त के अन्तर्गत राज्य के सात प्रकृतियों (सप्त प्रकृतियुक्त) पर प्रकाश डाला है- यह प्रकृतियाँ हैं- स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश, दण्ड एवं मित्र। अर्थशास्त्र 6.1
12. आराधना परमार, ए स्टडी ऑफ कौटिल्य अर्थशास्त्र, दिल्ली, (1967), पृ0 202

◆◆◆

पृष्ठ 50 का शेष **जल संकट : बढ़ती आबादी, घटता जल.....**

8. जल संरक्षण सम्बन्धी सरकारी योजनाओं का उचित क्रियान्वयन।
9. भवन-नक्शा पास करते समय 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम' अनिवार्य हो तथा भवन निर्माणोपरान्त समीक्षा।
10. स्थानीय स्तर पर कट्टा (चेक डैम) विकसित कर जल समस्या का समाधान।
11. प्रत्येक गाँव में 'वाटर मैनेजमेंट सेल' का गठन।
12. जागरुकता अभियान, प्रशिक्षण, कार्यशाला, संगोष्ठी एवं सम्मेलन के माध्यम से सामान्य-जन को 'जल संकट' की स्थिति से अवगत कराना तथा उनके द्वारा किये जा सकने वाले छोटे-छोटे मगर प्रभावी उपायों को अपनाने हेतु प्रेरित करना।

संदर्भः

1. दिनेश मणि, 'भारी धातुओं द्वारा जल प्रदूषण, जल चेतना, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की, खण्ड-3, अंक-2, जुलाई-2014, पेज-7
2. दिलीप अवस्थी, 'क्या होगा कल, जब नहीं होगा जल', दैनिक जागरण, कानपुर, 22 मई 2016, पेज-1
3. डॉ0 वीरेन्द्र कुमार, 'स्वच्छ जल, स्वच्छ जीवन', विज्ञान प्रगति, राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, नई दिल्ली, मार्च 2019, पेज 54-56
4. डॉ0 डी.डी. ओझा, 'सहभागिता से ही होगा जल संरक्षण', जल चेतना, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की, खण्ड-4, अंक-2, जुलाई-2015, पेज 10-11
5. मो0 खालिद जिलानी, 'बढ़ती आबादी, घटता पानी', अमर उजाला, कानपुर, 22 मार्च 2018, पेज-8
6. वॉटर एड, 'स्वच्छ पेयजल की समस्या', अमर उजाला, कानपुर, 22 मार्च 2018, पेज-8
7. मो0 खालिद जिलानी, 'बढ़ती आबादी, घटता पानी', अमर उजाला, कानपुर, 22 मार्च 2018, पेज-8
8. डॉ0 भरत झुनझुनवाला, 'जल संकट का इलाज', दैनिक जागरण, कानपुर, 12 अप्रैल 2016, पेज-10
9. वही,
10. वही,

◆◆◆